E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

October –December 2022 Volume 3 Issue VI (A) SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October –December 2022

Volume 3 Issue VI (A)

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

Digital Online Identifier-Database System

An International Digital and Virtual Library

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

October –December 2022 Volume 3 Issue VI (A) SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	प्रेमचंद का अद्भुत नारी चरित्र 'मुन्नी'	डॉ. फहीम अहमद	05
2	जनपदीय भाषाएं और मीडिया का बदलता स्वरूप	डॉ.जिन्दर सिंह मुण्डा	08
3	'हरी बिंदी' और स्वतंत्रता की जिजीविषा	डॉ सविता प्रमोद	12
4	कविता की भाषा	डॉ प्रज्ञा गुप्ता	14
5	मानवीय संवेदना और साहित्य	डॉ राम शरण सेठ	18
6	कृषि आधुनिकीकरण में मशीनीकरण की कालिक एवं स्थानिक प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन, जिला गुना (म.प्र.)	मनोज धाकड़ डॉ. दिनेश रावत	20
7	संस्कृत भाषा का महत्त्व	डॉ. महाश्वेता	26
8	स्त्रियों की प्रस्थिति व भूमिका एक अध्ययन	डॉ. ईश्वरी बृजवासी सूर्यवंशी	29
9	संजीव के फाँस उपन्यास में किसान त्रासदी	मन्नू देवी	33
10	उत्तराखंड राज्य में सामुदायिक रेडियो और स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में समुदाय के लिए रेडियो में प्रसारण	ऋतेश चौधरी ऋषभ भारद्वाज	37
11	प्रेमचंद के उपन्यासों के पात्र पर गांधीवाद का प्रभाव	प्रो. डॉ. आबासाहेब राठोड	41
12	वली दकनी (दक्खिनी) के काव्य में राम और कृष्ण	राहत जमाल सिद्दीक़ी	44
13	सतत् विकास का मार्ग : गांधीवादी दृष्टिकोण के सन्दर्भ में एक अध्ययन	बीनू कुमावत डॉ. फूल सिंह गुर्जर	48
14	मालती जोशी की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. डॉ. विजय श्रावण घुगे	51
15	सूरदास के काव्य में वात्सल्य रस	प्रा. डॉ. प्रवीण कांबळे	54
16	सुभद्राकुमारी का काव्य-विमर्श	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	56
17	करुणा की प्रवण गायिका : महादेवी वर्मा	डॉ. जितेंद्र पि. पाटील	62
18	उपन्यास : समय और संवेदना में चित्रित नारी समस्याएँ	डॉ.विठ्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत	65
19	तीसरी कसम : मारे गए गुलफाम कहानी का सफल फिल्मांतरण	डॉ.अमृत खाडपे	68
20	मंजुल भगत कृत 'अनारो ' उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	निखिल नाथा ठाकुर डॉ.संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी	72
21	हिन्दी उपन्यासों में कृषक जीवन का चित्रण	डॉ.रमेश टी. बावनथडे	75
22	हिंदी दलित काव्य में चित्रित मानवीय संवेदना	डॉ मंगल कोंडिबा ससाणे	79
23	पर्यटन विकास की सम्भावना की दृष्टि से गुजरात परिक्षेत्र के द्वीप : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. प्रेम प्रकाश राजपूत डॉ. पूनम मिश्रा	82
24	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी जी के पर्यावरण संबंधी चिंतन की प्रासंगिकता	डॉ ममता रानी	85
25	वैदिक समाज में नारी	डॉ . वीरेन्द्र कुमार जोशी	89
26	डॉ. भीमराव अम्बेडकर और सामाजिक शोषण के विविध स्वरूप व वैचारिक पृष्ठभूमि	डॉ. बिंदु कन्नौजिया	92
27	A Study of Self Esteem and Clothing Intrest Among Middle Age Working Women	Rashmi Gupta	96
28	Sports Management	Dr. Nitin Gangurde	101

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October –December 2022 Volume 3 Issue VI (A) SJIF Impact- 5.67

20

मंजुल भगत कृत 'अनारो' उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

निखिल नाथा ठाकुर
शोध छात्र (पी.एचडी)
डॉ. पंतगराव कदम कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
पेण, जि.रायगड, मुंबई विश्वविद्यालय

डॉ.संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी
शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष
लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय
पेझारी जि.रायगड

प्रस्तावना

समकालीन कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस दौर में अनेक नवीन विषय, कथा, शैली आदि को लेकर अनेक महिला कलाकारों का आगमन हुआ। उन समकालीन महिला कथाकारों में और विशेष रूप से सन 1970 के बाद आई हुई महिला कथाकारों में बहु चर्चित मंजुल भगत एक ऐसा नाम है, जिन्होंने अपने कथा साहित्य को मौलिकता और विषय के नयेपन से हिंदी कथा साहित्य में अपना अलग ही स्थान बनाया है। मंजुल भगत ने अपने कहानी और उपन्यासों के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उन्होंने बहुत अधिक साहित्य सृजन नहीं किया लेकिन जो भी लिखा है, वह बहुत ही मौलिक है। उनके उपन्यास और कहानियों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है।

अनारो उपन्यास का परिचय-

अनारो मंजुल भगत जी का तीसरा उपन्यास है, जो बहुत चर्चित रहा है। इसमें निम्न वर्ग से संबंध रखने वाली साहसी स्त्री ''अनारो की संघर्षपूर्ण जीवन कथा प्रस्तुत की है। वह अपने शराबी पती एवं बच्चों के साथ रहती है। और अपने रीति-रिवाजों को अपनाकर जीवन यापन करती है, उसका पती दूसरी औरत को घर लेकर आता है। अनारो के ही पैसे से वह शराब पीकर उसे मारता पीटता है। मात्र अनारो अपने पती को त्याग नहीं पाती है। अनारो दूसरों के घरो में झाड़ू, पोछा, बर्तन आदि करती है। उसे गंजी और छोटू नामक दो बच्चे हैं। पती नंदलाल के घर से भाग जाने के कारण ही उसे यह काम करना पड़ता है। अनारो अपने दोनों बच्चों को विद्यालय भेजती है। शिक्षक के समझाने पर अनारो कुछ ना कुछ पैसे डाकखाने में जमा करती है। देखते-देखते गंजी विवाह योग्य हो जाती है। गंजी का विवाह करने के लिए अनारों उसके पति नंदलाल को शहर से वापस ले आती है। अनारों को पता चलता है कि वह दो माह से गर्भवती है, तो वह अपने बच्चों के शिक्षकों की सलाह से अपना गर्भपात करती है। अस्पताल से लोटने के पश्चात वह देखती है कि मनोहर और गंजी ने मंदिर मे विवाह किया है। मात्र परंपरावादी सोच रखने वाली अनारो गंजी का विवाह बड़ी धूमधाम से करना चाहती है। बाद में अनारो बड़े धूमधाम से दान, दहेज, जशन के साथ बेटी को विदा करती है। इस कारण नंदलाल अनारो की शराब पीकर प्रशंसा करता है।

अनारो निम्नवर्गीय काम करने वाली ऐसी आत्मस्वामिनी नारी के रूप में उभर आती है, जो आर्थिक, सामाजिक, रुढियों और पती के अत्याचार को सहते हुए भी सन्मान सहित जीवन का संघर्ष करती है।

सामाजिक समस्या का अर्थ एवं स्वरूप-

समकालीन भारतीय समाज में अनेक ऐसी समस्याएं हैं, जिनका समुचित हल नहीं निकल पाया है। समस्याओं कि जडे भारतीय समाज में इतनी गहरी है, कि यदि किसी एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने की प्रक्रिया में अनेक समस्याओं का खुलासा अपने आप होने लगा है।

शायद इसीलिए सामाजिक समस्या को सामाजिक आदर्श से विचलन कहते हैं। वर्तमान में आंतकवाद, मद्यपान, स्त्री-पुरुष भेदभाव, रूढी परंपराएं, विवाह बाह्य संबध, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि समस्याओं का हल नहीं निकल सकता।

सामाजिक समस्या की अवधारणा-

सामाजिक समस्या को "सामाजिक आदर्श का विचलन माना गया है जो सामूहिक प्रयत्न से ठीक हो सकता है" (१) इस परिभाषा में दो तत्व महत्वपूर्ण है: (१) एक स्थिति जो आदर्श से कम है, यानी जो अवांछनीय या असाधारण है, और (२) जो सामूहिक प्रयत्न से ठीक हो सकता है। यद्यपि इसका निर्धारण करना सरल नहीं है कि कौनसी स्थिति आदर्श है और कौन सी नहीं और ऐसा कोई मापदड भी नहीं जिसे इसको जांचने के लिए प्रयोग में लाया जा सके, फिर भी यह स्पष्ट है, कि सामाजिक आदर्श कोई मन मान विचार या मत नहीं है, और सामाजिक समस्या शब्द उसी विषय के लिए उपयोग किया जाता है जिसे सामाजिक आचार शास्त्र और समाज से प्रतिकूल है।

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429
October –December 2022 Volume 3 Issue VI (A) SJIF Impact- 5.67

सामाजिक अवधारणा के बारे में कुछ और दृष्टिकोण पर विचार किया जा सकता है। फुलर्स और मेयर्स ने सामाजिक समस्या की परिभाषा देते हुए कहा है कि," यह वह स्थिति है जिसे व्यक्तियों की बड़ी संख्या आकांक्षित सामाजिक मानदंडों से विचलन मानती है। "(२) रेनहार्ट ने सामाजिक समस्या की यह कहकर व्याख्या की है, कि यह" वह स्थिति है जिसमें समाज का एक खंड, या एक बड़ा भाग प्रभावित होता है और जिसके ऐसे हानिकारक परिणाम हो सकते हैं जिनका सामूहिक रूप से समाधान संभव है"।"(३) इस प्रकार किसी सामाजिक समस्या स्थिति के लिए कोई एक या कुछ व्यक्ति उत्तरदायी नहीं होते और इस पर नियंत्रण पाना एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के बस की बात नहीं होती। इसका उत्तरदायीत्व सामान्य रूप से पूरे समाज पर होता है।

अनारो उपन्यास में चित्रित सामाजिक समस्या-

मनुष्य जिस समाज में अपना जीवन यापन करता है, उस समाज में उसे अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सामान्यतः व्यसनाधिनता, स्त्री-पुरुष भेदभाव, विवाह बाह्य संबंध, अंधविश्वास, विकृत रुढिया आदि। अनारों उपन्यास में भी इन्ही सारी समस्याओं को मंजुल भगत ने चित्रित किया है।

व्यसनाधिनता -

नियमित रूप से हानिकारक पदार्थ जैसे शराब, नशीले पेड़, तंबाकू, बीड़ी या सिगरेट आदि का सेवन को व्यसनाधिनता कहते हैं। मद्यपान करके अपने पत्नी तथा बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। स्वास्थ्य के लिए शराब ज्यादा हानिकारक है। व्यसनाधिनता से गंभीर बीमारियां जैसे कैंसर, हृदय रोग, श्वास आदि हो जाती है।

अनारों उपन्यास मैं अनारों का पती नंदलाल जो कि शराबी है। शराब पीकर वह व्यसनाधीन बन जाता है। व्यसनाधिनता के कारण वह परिवार की उपेक्षा करता है। अनारों एक दिन अपने पति के बारे में सोचकर कहती है। दारू बोतल गाली-गलौज, मारकाट, कर्जा ,उधारी, सब ही कुछ कर कर के भाग लेगा। (४) अनारों का कहना है, कि नंदलाल दारू बोतल के कारण घर में वाद विवाद पैदा कर भागने वाला व्यक्ति है। जिससे अनारो को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार अनारो उपन्यास मैं व्यसनाधिनता की समस्या पायी जाती है।

स्त्री- पुरुष भेदभाव

स्त्री पुरुष मानव समाज के दो महत्वपूर्ण अंग है। किसी एक के अभाव से समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। लेकिन इसके बावजूद भी स्त्री-पुरुष भेदभाव एक सामाजिक समस्या का रूप धारण करती है। पुरुष के समान स्त्री को समान अवसर नही दिया जाता। स्त्रियों को एक कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता है।

उन्हें शोषित एवं अपमानित किया जाता है। इस रूप से स्त्रियों के साथ भेदभाव करना एक सामाजिक समस्या का रूप धारण करती है।

अनारों उपन्यास में स्त्री-पुरुष भेदभाव की समस्या का चित्रण हुआ है। अनारों उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र है। अनारों की बेटी गंजी जब विवाह योग्य हो जाती है। तब अनारों अपने बेटी गंजी का विवाह कर उसे गृहस्थ जीवन में भेजना चाहती है। मात्र अनारों का पति नंदलाल उसे छोड़ जाने के कारण गंजी के विवाह की बात आगे नहीं बढ़ पाती हैं। "पर वह भी मेरी मां ने कहना भेजा की जिसके बाप का ही अता पता नहीं, उस लौंडिया को लाकर क्या करेगा।। (५) इस वाक्य से पता चलता है कि समाज आज के युग में भी दकियानुसी सोच रखता है। पति घर परिवार को छोड़कर गया है। इसमें पत्नी अनारो व बेटे गंजी का क्या दोष है। वास्तव में अनारो सारी जिम्मेदारियों को बखूबी से निभाती है। इस प्रकार यहाँ स्त्री-पुरुष भेदभाव इस सामाजिक समस्या का चित्रण करने में लेखिका सफल हुई है।

विकृत रुढी-परंपराएं -

ऐसी परंपराएं जो लंबे समय से समाज में प्रचलित होती है और जिसको हम बिना सोचे समझे, बिना अपने बुद्धि विवेक का प्रयोग किए केवल इसलिए आचरण में लाते हैं, उन्हें रूढी परंपरा कहते है। मात्र यह रूढी परंपरा सामाजिक व्यवस्था में कभी-कभी समस्या निर्माण करती है। रूढी परंपरा को आगे चलाने हेतु व्यक्ति कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। जिसमें व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अनारो उपन्यास में आधुनिक युग में भी पारंपारिक रुढियों को अपनाने के कारण उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनारों अस्पताल में होने के कारण अपनी बेटी गंजी और मनहर का विवाह मनहर के माता पिता मंदिर में रचा देते हैं। मात्र अनारो अस्पताल से वापस आने के बाद वह उस विवाह को स्वीकार नहीं करती। परंपरावादी रुढीयों को अपनाने वाली अनारो समाज के खातिर गंजी का विवाह फिर से रचा देती है। "सभी कुछ हो रहा है अनारों की झुग्गी में। ढोलक की

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
October –December 2022 Volume 3 Issue VI (A) SJIF Impact- 5.67

थाप, गीत के बोल और घुंघरू की रुनझुन। पत्तलो के सामने पंगत की पंगत बैठी कैचौडी-लड्डू उड़ा रही है। अनाथ आश्रम का बैंड और उससे होड लगाती। हिजडो की ओय-होया"(६) समाज के लिए पुराने रुढी परंपरावादी को और झुकते हुए अनारो करजा निकाल कर अपनी पुत्री का विवाह फिर से रचती है। जो विवाह ईश्वर को साक्षी मानकर मंदिर में कम से कम खर्च में हुआ था, उसे आज फिर से रचाने के लिए उधारी और कर्जा निकालना पड़ता है। इस प्रकार विकृत रुढी परंपरा को अपनाने से सामाजिक समस्या को आमंत्रित किया जाता है।

विवाह बाह्य संबंध-

भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री पुरुष सामाजिक धार्मिक मान्यताओं से विवाह बंधन हो जाता है। जो कि अपूर्ण जीवन एक दूसरे के साथ निभाते हैं। मात्र कुछ स्त्री पुरुष ऐसे होते हैं जो कि घर में अपना जीवन साथी होने के बावजूद भावनिक या शारीरिक आकर्षण के प्रति विवाहबाह्य संबंध प्रस्थापित रखते हैं। इस विवाहबाह्य संबंध के कारण परिवार में कलह और अशांति निर्माण होती है। परिवार बिखरने लगता है। समाज में विवाह बाह्य संबंध रखने पर अपमानित होना पड़ता है। उसी के साथ परिवार के सदस्यों को लज्जित होना पड़ता है।

अनारों उपन्यास में अनारों के पति गुणवान पत्नी होकर भी नंदलाल विवाह बाह्य संबंध रखकर अनारों को सौतन ले आता है। इस पर अनारों नंदलाल को देखते हुए कहती है। "भगोड़ा कहीं का। गंजी को पेट में ले मायके क्या गई, पीछे इसने लाके सौतन छाती पर रख दी।" (७) अनारों जब गर्भ में गंजी होने पर भी नंदलाल विवाहित होकर भी छबीला नामक स्त्री को अपना कर उसके साथ विवाहबाह्य संबंध बनाता है। इसी कारण अनारों का समाज में लज्जित होना पड़ता है। उसी के साथ साथ अनारों को मानसिक दशा पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इस तरह से आनारों उपन्यास में विवाह बाह्य संबंध इस सामाजिक समस्या का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष-

मंजूल भगत जी के अनारों उपन्यास में एक सामाजिक कथावस्तु का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है। यह उपन्यास सामाजिक धरातल पर खरा उतरता है। अनारों उपन्यास में अनारों जो कि एक स्त्री होकर भी अनेक सारी समस्या उसके सामने खड़ी रहती है। अनारों को विविध सामाजिक समस्या का सामना करना पड़ता है। उसके सामने आई हुई समस्या को वह बेखुबी से संघर्ष कर अपना निपटार भी करती है। परिवारिक जीवन में अनारों को दुख भरी यातना से गुजरना पड़ता है। मात्र अनारों एवं यातना एव दुख को भूल कर अपना जीवन यापन करती है। यह उपन्यास गृहस्थी जीवन से लेकर सामाजिक जीवन तक खरा उतरता है। उपन्यास की अनारों पात्र एक आदर्श नारी एवं संघर्षमय स्त्री के रूप में हमारे सामने अधोरेखित होती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. राम आहुजा - सामाजिक समस्या :- रावत पब्लिकेशन, जवाहर नगर, जयपूर, प्रथम संस्मरण 1999 पृष्ठ 1
2. राम आहुजा - सामाजिक समस्या :- रावत पब्लिकेशन, जवाहर नगर, जयपूर, प्रथम संस्मरण 1999 पृष्ठ 2
3. राम आहुजा - सामाजिक समस्या :- रावत पब्लिकेशन, जवाहर नगर, जयपूर, प्रथम संस्मरण 1999 पृष्ठ 2
4. कमल किशोर गोयनका :- अनारो मंजुल भगत का समग्र कथा साहित्य (1),किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 पृष्ठ 67
5. कमल किशोर गोयनका :- अनारो मंजुल भगत का समग्र कथा साहित्य (1),किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 पृष्ठ 84
6. कमल किशोर गोयनका :- अनारो मंजुल भगत का समग्र कथा साहित्य (1),किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 पृष्ठ 103
7. कमल किशोर गोयनका :- अनारो मंजुल भगत का समग्र कथा साहित्य (1),किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 पृष्ठ 68